International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

वैदिक साहित्य में वहित पर्यावरण संरक्षण की परिकल्पना वर्तमान संदर्भ में

डॉ. सुमेर संह बैरवा, सह आचार्य - संस्कृत
राजकीय महा वद्यालय राजगढ़ -अलवर (राजस्थान)

'परितः आवरणम् इति पर्यावरणम्'

पर्यावरण शब्द परि तथा आ उपसर्गपूर्वक 'वृ' धातु से ल्युट लगने से व्युत्पन हुआ है। जिसका अर्थ है 'चारों ओर का आवरण या आच्छादन' तो इस प्रकार हम कह सकते हैं क वह वस्तु जो हमें चारों ओर से घेरती है हम पर सीधा प्रभाव डालती है, पर्यावरण कहलाती है। 'पर्यावरण' शब्द फ्रेञ्च भाषा के 'इन्वारोरेन' से बना है, जिसका अंग्रेजी रूपान्तरण 'द राउण्ड' है जिसका अर्थ है चतुर्दिक दिशाएँ अथवा चारों ओर की आवृत्ति या घेरा है। पर्यावरण की समस्या से मुक्ति पाने के लये हमें वेद की शरण में जाना होगा। 'वेद' ईश्वरीय वाणी है एवं अक्षय ज्ञान के स्त्रोत है। जीवन से सम्बन्धित सभी पक्ष वैदिक संहिताओं में व र्णत है। पर्यावरण को शुद्ध रखने के लए वैदिक काल में लोग वैदिक रीति से यज्ञ- वधान से हवन करते थे। वैदिक ग्रन्थों के अनेक मंत्रा में पर्यावरणीय संचेतना के बीच परिल क्षत होते हैं। पर्यावरण सन्तुलन में वृक्षों का बहुत महत्त्व है। सृष्टि की सर्वोत्तम कृति, मानव हैं। मानव पृथ्वी का भूषण है। पृथ्वी ने मानव को सजाया है। आज मानव अपनी भौतिक सुख सु वधाओं के लये वृक्षों की कटाई कर रहा है। वृक्षों को प्राचीन वैदिक साहित्य में पुत्रों से भी बढ़कर माना गया है। तुलसी, पीपल, बरगद आदि वृक्षों को प वत्र माना गया है, जिसके माध्यम से हमारी संस्कृति पल्ल वत होती है। स्वार्थी मानव अन्धाधुन्ध वृक्षों एवं वनों की कटाई कर रहा है। काटे गये वृक्ष के स्थान पर अन्य वृक्ष नहीं लगाये जा रहे हैं। वनस्पतियों, वृक्षों, वनों की हमें रक्षा करनी चाहिये। वृक्ष कार्बन डाईआक्साइड के रूप में वषपान करते हैं और आक्सीजन के रूप में जीवनदान करते हैं। यदि संतुलन बिगड़ गया तो मानव शुद्ध वायु को प्राप्त नहीं कर सकेगा। वकासशील मानव ने प्रकृति की निःशुल्क नि ध वसुन्धरा का मनमाना दोहन शुरू कया। वस्तृत निर्मल नीर संकु चत और दू षत होने लगा। लहलहाती वनस्पतियों से भरा धरातल वीरान होने लगा। वन्य जीवों का आबाद आवास उजाड़ कर मानव अपनी अ ा लकाए बनाने लगा। तन मन को प्रफुल्लित करने वाली स्वच्छ वायु वषैली लगने लगी। कृ ष, उद्योग, व्यापार, च कत्सा यातायात राजनीति आदि नाना क्षेत्रों में वकास को अन्धाधुन्ध दौड़ से ऐसी गर्दगुबार उठने लगी जिसने जल, थल एवं नम की सहजता को नष्ट करने के साथ ही मानवीय वचारों को मानवीय वचार नहीं रहने दिया। प्रत्येक वस्तु की सहजता का हनन, स्वच्छता में गन्दगी को हम दोष कह सकते हैं। वर्तमान में पर्यावरण प्रदूषण एक गम्भीर समस्या है। पर्यावरण एवं प्रदूषण काया - छाया की भांति हुए हैं।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आज हम स्वच्छ वायु के लए परेशान हैं, स्वच्छ जल के लए तरस रहे हैं। शान्त स्थान के लए व्यग्र है। वेदों में वृक्षों की स्तुति करते हुए प्रार्थना की गयी है क वे हमारी रक्षा करें, हमें वरदान दें

या ते रूद्र शवा तनूः शवा वश्वहा भेषजी।

शवा रुतस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे ।।'

पौधे पृथ्वी की रक्षा करते हैं। हरियाली धरा का शृंगार है। हरी-भरी वृक्ष वनस्पतियों से युक्त भू म को सुखदायिनी बताते हुए स्वागत योग्य बताया गया है

यस्यां वृक्षा वानस्पत्या ध्रुवास्तिष्ठन्ति वश्वहाः ।

पृ थवी वश्वधायसं घृतामच्छावदाम स ।।

पृ थवी को वेदों में ईश्वर का स्वरूप माना गया है। भू म की रक्षा पूजा का एक अ वभाज्य अंग था। अथर्ववेद के भू मसूक्त में यह उपदेश दिया गया है क अपनी मातृभू म के प्रति मनुष्यों में श्रद्धा का भाव होना चाहिये। वहाँ भू म को माता समझने एवं उसके प्रति नमस्कार करने का स्पष्ट शब्दों में उल्लेख कया गया है सा नो भू म र्वसृजता माता पुत्राय में पयः' अर्थात् पृ थवी माता मुझे पुत्र के लये दुग्ध आदि पुष्टिकारक पदार्थ प्रदान करें। नाना प्रकार के फल, औष धयाँ फसलें पेड़-पौधे इसी भू म पर उत्पन्न होते हैं। पृ थवी सभी वनस्पतियों को माता एवं मेघ पता है, क्यों क वर्षा के रूप में पानी बहाकर मेघ पृ थवी का गर्भाधान करता है। अतः वर्षा से स्नेह रखने वाली मेघ से पालन की गयी उस भू म को हमारा नमस्कार होवे। भू म का प्रदूषण से बचाव करके पर्यावरण की रक्षा करना पूजा का एक अ वभाज्य अंग था, जैसा क कहा गया है।

यस्य भू मः प्रभान्तरिक्षमुतोवरम् ।

दिवं यश्चक्रे मूर्धानं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मण नमः ॥'

अथर्ववेद में स्पष्ट शब्दों में कहा गया है क जो औष धयाँ एवं वनस्पतियों को मारकर पृ थवी को सताता है, उन्हें पृ थवी हिला देती है, पी ड़त करती है एवं नष्ट कर देती है

ये ग्रामाः यदरण्यं या सभा अ ध भूम्याम् ।

ये संग्रामाः स मतयस्तेषु चारु वदेम ते।।

आज जल भी प्रदूषण से अछूता नहीं है। भागीरथी गंगा का जल भी प्रदू षत हो चुका है। जल ही जीवन है। यदि हम प्रदू षत जल का सेवन करेंगे तो हमारे स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा प्रदू षत जल अनेक रोगों का मूल कारण है। कारखानों से निकलने वाला रसायन जल प्रदूषण का मूल कारण है अप्स्वन्तरमृतमप्सुभेषजम्(अर्थ - जल में जीवन है जल में औष ध है)। वेदों में घर के समीप शुद्ध जलाशय को आवश्यक बताया गया है क्यों क शुद्ध जल मनुष्य को दीर्घ आयु प्रदान करने वाला, प्राणों का रक्षक एवं कल्याणकारी है। इस प्रकार शुद्ध जल के बिना जीवन अधूरा हैं। वैदिक ऋचाओं में जल संरक्षण की संचेतना दिखायी देती है। जल शु द्ध के साथ ही साथ वायु की शु द्ध भी जीवन के लये सर्वा धक महत्वपूर्ण है। अतः वायु भी शुद्ध रूप प्रवाहित होकर हमें रागरहित बनाये। श्वास लेने योग्य शुद्ध वायु समस्त रोगों से हमारी रक्षा करे एवं औष धयाँ प्रवाहित करके हमारे समीप लाये

आ वात वाहि भेषजं हि बात वाहि यद्रूपः ।

त्वं हि वश्वभेषजं देवानां दूत ईयसे ॥

त्रायन्त ममं देवास्वायन्ता मरुता गणाः ।

त्रायन्ता वश्वा भूतानि यथायमरण असत् ॥

वायुमण्ड शु द्धकरण हेतु 'यज्ञ' को वेदों में सर्वश्रेष्ठ साधन बताया गया है। यज्ञ में 'ह व' के रूप में डाले गये पदार्थ अग्नि में जलकर सूक्ष्म रूप में परिणत हो वायुमण्डल में प्रदूषण को नष्ट करते हैं। यज्ञीय अग्नि के द्वारा वायु, जल, पृ थवी आदि का प्रदूषण नष्ट हो जाता है। वैदिक साहित्य में यज्ञीय द्रव्यों से वातावरण को संभू षत करने वाला पुरुष पीड़ा से दूर रहकर शक्तिवान होकर पाप कर्मों से वमुख रहता है

व्यात्यां पवमानो व शक्रः पाप त्यया।

व्यहं सर्वेण पाप्मना व यक्ष्मेणसमायुषा ।।'

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पृथ्वीसूक्त में अथर्ववेद में ऋ षयों ने कहा है क 'हे धरती माँ जो कुछ भी तुझसे लूँगा, वह उतना ही होगा जिसे तू पुनः पैदा कर सके। तेरे मर्मस्थल पर या तेरी जीवन शक्ति पर कभी आघात नहीं करूंगा। 'ऋग्वेद में कहा गया है क हमारी दैवीय नदियाँ हमारी रक्षा के लए दयामय बनी रहें, वह हमें पीने के लए जल प्रदान करती रहें और हम पर आनन्द और खु शयाँ बरसाती रहें। हमारी बहुमूल्य नि धयों और मानव की भी वधाता, है नदियाँ हम तुम्हारे जल के. अरोग्यकर जल के आकाँक्षी हैं। ऋग्वेद के ऋ ष केवल पंच भूतों के माहात्म्य से ही अवगत नहीं थे अ पतु वे औष धयों तथा पादपों के गुणों से भी पूर्णत: अ भज्ञ थे। एक मंत्र में ऋ ष औष धयों से फूलों एवं फलों से लदे रहने की कामना करता है

औषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवती प्रसूवरीः ।

अश्वः इव सजित्वरीवरुथः पार मष्णवः ॥

ऋग्वेद के अरण्यानीसूक्त 10-16 में ऋ ष देवमुनि ने अरण्यानी को वन की देवी के रूप में चत्रित कया है। उन्होंने छह मंत्रों में 'अरण्यानी' की स्तुति की है। इन मंत्रों में ऋ ष के पर्यावरण के प्रति उत्कृष्ट मनोभावों को देखा जा सकता है। वह घो षत करता है, जब तक कोई अन्य 'अरण्यानी' पर आक्रमण कर उसे हानि नहीं पहुँचाता है तब तक वह भी कसी को कष्ट नहीं पहुँचाती है

न वा अरण्यानिहन्त्यन्यश्चेन्ना भगच्छति।

स्वादो: फलस्य जग्ध्वाय यथाकामं निपद्यते॥

यजुर्वेद में 'वृक्षाणां पतये नमः' कहकर वृक्षों की रक्षा करने वालों के प्रति सत्कार प्रद र्शत कया गया है। आयुर्वेद में रोग निवारण के लए प्रयोग में आने वाली वनस्पति कब, कैसे, कसके द्वारा उखाड़ी जाय, जिससे कोई अयोग्य पुरुषउस वनस्पति का वंश नष्ट न कर दे। ऋग्वेद का अरण्यानी' सूक्त बनों की रक्षा के लए प्रेरणादायक है। जिस संस्कृति के मानने वालों की आयु का 3/4 भाग वन में ही व्यतीत होता हो जहां आज भी पीपल, बरगद, बेल और तुलसी जैसे वृक्षों का इस देश में पूजन होता हो, उससे अ धक वनों के महत्व को कौन जान सकता है? वृक्ष, वनस्पतियों को पृथ्वी की लोम रा श कहा गया है। वृक्षों में सबसे अ धक प्राण वायु पीपल का वृक्ष देता है। इस लए हमारे वेदों में पीपल वृक्ष की पूजा की जाती है और इसको काटना घोर अपराध बताया गया है। उन्हें जीवन की अनिवार्य आवश्यकताओं के लए प्रयुक्त तो कया जा सकता है कन्तु भोग.. वलास वैभव प्रदर्शन के लए काटना पाप है। इससे पर्यावरण बिगड़ता है और संतति पर संकट आते हैं। प्रकृति का सौंदर्य बिगाड़ने का प्रयास पाप कर्म है। प्राकृतिक सम्पदा का उपयोग हो, उपभोग कदा प न हो। जो

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

देता है वही देवता है इस लए वह पूज्य भी है और संरक्षणीय भी। वैदिक मंत्र हमारी मान सकता बताते हैं क नदियाँ देवी रूपा हैं, वृक्ष देवता हैं, पहाड़ देवता हैं, उनका निर्मल तन्मात्र स्वरूप श्रेयस्कर है। वैदिक अनुष्ठानों में पदार्थों की शुद्धता पर वशेष बल दिया गया है। क्यों क शुद्धता नत्रलन चक्र एवं पर्जन्य चक्र को नि र्मत करती है और इन्हीं से सृष्टि का अस्तित्व बना हुआ है। ऋग्वेद के एक मंत्र में इसी भाव को इं गत करते हुए जल दे वयों के शो धका सदा गमनशील, दिव्य, प वत्र रूप का उल्लेख है

या आपो दिव्या उत वा स्ववन्ति

खनित्रिमा उत वा याः स्वयन्जा

समुद्रार्था या शुचयः पावकास्ता

आपो देवीरिहमामुवन्त ।।'

यहाँ ऋ ष को मानव मात्र के रोगमुक्त, जीवन के प्रति उतनी ही चन्ता है जितनी क प्रकृति के प्रति मैत्री और अहिंसक भाव को वन में मृग भी है और संह भी सम्पूर्ण वैदिक साहित्य मानो प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से यही रेखां कत करता सा प्रतीत होता है क जीवों का वनों में निर्भय वचरण ही जीवन

मा त्वा श्येन उद्वधीमा सुपर्णो मा त्वा वददिघुमान्वीरो अस्ता ।

पत्र्यामनु प्रदिशं कनिक्रदत्सुमंगलों मद्रवाही वदेह ॥

पर्यावरण संतुलन के मूल में जीव वनस्पति आदि के सह अस्तित्व का भाव है। प्रकृति का दिव्य संतुलन भी इसी आधार पर निर्भर है। शाश्वत एवं सर्वोपरि प्रथम नियमों का ववरण जो देवी नियमों की मर्यादा में बंधे हैं, स्थिर पर्वत कभी झुकते नहीं, द्रोह रहित धावा पृथ्वी भी उनका उल्लंघन नहीं करते ऐसा उल्लेख भी वेदों में मलता है। इस मंत्र में बु द्धमानों से अपेक्षा की गयी है क वे प्रकृतिगत दैवी नियमों में रहे अर्थात् प्रकृति के दिव्य संतुलन को न बिगाड़े-

न ता मनन्ति मायिनो न धीरा व्रता देवानां प्रथमा ध्रुवा ण ।

न रोदसी अहा वैद्या भनं पर्वता निनमे तस्थिवांसः ॥'

ऋग्वेद में वर्णन आया है क ऋतुगणों ने पृथ्वी और आकाश के बीच सुरक्षा कवच के रूप में आयन मण्डल का निर्माण करने के साथ ही कवचों का निर्माण कया। ये सुरक्षा कवच ये हैं, जिन्हें आज का वज्ञान ओजोन पर्त

के रूप में जान पाया है जो सूर्य से आती पराबैगनी करणों को परावर्तित और निष्प्रभावी बनाने का कार्य करती है। हमारे प्रगतिशील वैज्ञानिक जिस खतरे को ओजोन क्षय के रूप में 70 दशक में जान पाये उसका पूर्वाभास हमारे वेदज्ञ मनी षयों को युगों पूर्व हो चुका था। प्रकृति में देवों से प्रेरित यह अन्तरिक्ष कवच आकाश के अवाक्षनीय प्रवाहों से भूमण्डल की रक्षा करता है। यह मंत्रों से पुष्ट होता है। अथर्ववेद में मलता है क यज्ञ से यह कवच पुष्ट हो सकता है यह वस्तृत देवी स्वरूपा पृथ्वी शुभ संकल्पों से युक्त होकर चर्म रूपी डाल धारण करें। जिससे हम पुण्य प्राप्त करें।

पर्यावरण को क्षति, जल, पावक, गगन, समीरा का मला रूप कहा गया है। ऋग्वेद में इनको देवता माना गया है और उनको स्तुति का वर्णन है। यास्क निरुक्त अध्याय 7 से 12 दैवत काण्ड में वैदिक देवताओं पर ववेचन प्रस्तुत करते हुए तीन देवों को मुख्य माना है 1 पृथ्वीस्थानीय अग्नि 2. अन्तरिक्षस्थानीय इन्द्र, वायु 3. स्थानीय सूर्य तिस्त्र एवं देवता इति नैरुक्ताः। संस्कृत वाङ्मय प्रधानतया तीन रूपों में जाना जाता है 1. वैदिक साहित्य 2. लौ कक साहित्य, 3. अर्वाचीन साहित्य वैदिक साहित्य अनन्त ज्ञान रा श के अक्षय भण्डार है। इनमें निहित वैदिक मन्त्रों का मूल मानव कल्याण और पर्यावरण संरक्षण है।

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु वश्वत....

वश्वानि देव.... आसुवः ॥

अथर्ववेद के उपवेद आयुर्वेद में वृक्ष लताओं की जड़ों से असाध्य रोगों से समाप्त के उपाय लखे हुए है, पर यह तभी सम्भव है जब उस पौधे को जड़ की रक्षा वर्तमान प्रदूषण से बचाते हुए की जाया क वयों में अग्रगण्य का लदास ने पर्यावरण पर अप्रतिम उद्धरण अपने नाटक अ भज्ञानशाकुन्तलम् में दिया है शकुन्तला के वदाई के अवसर पर केवल ऋ ष कश्यप ही नहीं अ पतु तपोवन के सभी देवता, वृक्ष, पशु और पक्षी दुःखी थे। क्यों क शकुन्तला जी वत जाग्रत प्रकृति थी। वृक्ष और मनुष्य के बीच परस्पर प्रेम और आपसी समझ को हमारे ऋ षयों और मुनियों ने बहुत पहले ही बता दिया था, जिस पर आज वैज्ञानिक अनुसंधान कर रहे हैं आज पर्यावरण रक्षा के प्रति सजगता लाने का प्रयास कर रहे हैं। अ भज्ञान शाकुन्तलम् में कण्व शकुन्तला के बारे में कहते हैं

पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्पास्वपीतेषु या

नावने प्रयमण्डना प भवतां स्नेहेन या पल्लवम् ।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आद्ये वः कुसुमप्रसूतिसमये यस्या भवत्युत्सवः

सेयं याति शकुन्तला पतिगृह सर्वेरनुज्ञायताम्।।'

वैदिक काल में ऋ ष मुनियों ने मानव जीवन के लये बड़ी ही सुन्दर परिकल्पना की है- 'सर्वे भवन्तु सु खनः..... ..दुःखभाग् भवेत्।।" अर्थात् सभी सुखी हो सभी निरोग हो, सभी कल्याण के भागी हों, कोई दुःख का भागी न बने। कन्तु आज वैदिक ऋ ष-मुनियों की यह कल्पना चरितार्थ नहीं हो पा रही है। आज के वैज्ञानिक युग में मनुष्य ने जितनी उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं, उससे भी अ धक खोया है। म ी, जल, वायु, वनस्पति, पशु, पक्षी, कीट पतंगे सभी पर्यावरण के अंग हैं। इनमें वनस्पति सहकारी तत्व है जो वायु के शु द्धकरण में जल के संरक्षण में जल के उत्पादन में, ताप को कम करने में सहायक है। अपने जीवन के बाद भी ये वृक्ष अनेक जीवों के लए भोजन और खाद पैदा करते हैं। कन्तु मानव अपने थोड़े से लाभ के लये वनों की अंधाधुंध कटाई करता जा रहा है। एक वृक्ष अपने 50 वर्ष के जीवन में मनुष्य जाति के लये 25 लाख रूपये के बराबर लाभ पहुँचाता है, उससे प्राप्त हुआ खाद का मूल्य करीब 15 लाख रूपये का होता है, ऐसा वैज्ञानिकों का अनुमान है। मत्स्य पुराण में कहा भी गया है, दस पुत्र समो वृक्षः " अर्थात् दस पुत्र के समान एक वृक्ष होता है। महाभारत में व्यास जी ने हरे वृक्ष को काटना जीव वध के समान बताया है। व्यास जी कहते है:

एतेषां वृक्षाणां छेदनं नैव कारयेत्।

चार्तुमासे वशेषेण बिना यज्ञादिकारणम्॥'

शब्दार्थ सर्ववृक्षाणां = सभी वृक्षों की। छेदनम् = कटाई। 'कारयेत्' = करना चाहिए। चातुर्मासे = वर्षा के चार महीनों में। वशेषेण = वशेष रूप से। वना यज्ञादिकारणम् = यज्ञ आदि कसी प वत्र उद्देश्य के बिना।।

प्रसंग प्रस्तुत श्लोक में बिना कसी वशेष प्रयोजन के वृक्षों को न काटने का परामर्श दिया गया है।

अन्वय एतेषां सर्ववृक्षाणां यज्ञादिकारणं वना छेदनं न कारयेत्। वशेषेण चातुर्मासे एव (एतेषां छेदनं न कारयेत्)।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

व्याख्या मह र्ष भृगु कहते हैं क इन सभी वृक्षों की यज्ञादि वशेष कारण के बिना कटायी नहीं करनी चाहिए; अर्थात् यज्ञादि के समय आवश्यकता पड़ने पर ही वृक्षों को काटना चाहिए। वशेष रूप से वर्षा के चार महीनों में इन्हें नहीं काटना चाहिए।

कन्तु उद्योगों की स्थापना एवं शहरीकरण के कारण बहुत जंगल नुकसानदायक होते जा रहे हैं। बाद, म ी का कटाव पर्यावरण संतुलन को बिगाड़ दे रहा है। ऐसे समय में जरूरी है क हम ज्यादा से ज्यादा वृक्षों को लगाये और उसकी रक्षा करें। आज मेघ वर्षा भी कर रहे हैं तो तनावयुक्त जब क मेघदूतम् में का लदास ने मेघ की बड़ी ही सुन्दर संरचना की है : 'धूमज्योतिः स लल मरुतां सन्निपातः क्वमेषः " वृक्षों की अंधाधुंध कटाई से वायु प्रदूषण करने वाले कारक बढ़ते चले जा रहे है। वायु प्रदूषण इतना बढ़ता जा रहा है, व्यायाम या सांग भी कारगर सद्ध नहीं हो पा रहा है। आज हम व्यायामशाला जाये या घरों में व्यायाम करें तब भी हमारे फेफड़े को वहीं प्रदू षत वायु मलती है। एक सामान्य मनुष्य 22000 बार श्वास लेता है। आज वृक्षों की कतार कम होती जा रही है। वृक्ष स्वयं रोगी होकर सूख जा रहे है। हमारे पशु-पक्षी भी पर्यावरण संतुलन द्वारा पर्यावरण को स्वच्छ करते हैं। पक्षी संरक्षण पर वशेष जोर रामायण में भी मलता है, जब वाल्मी क जी बहे लये को क्रौंच पक्षी को मारते देखते है और अचानक उनके मुंह से श्लोकबद्ध भाव निकलता है:

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः ।

यत्क्रौञ्च मथुनादेकमवधीः काममोहितम्।।"

(हे निषाद, तुम अनंत वर्षों तक प्रतिष्ठा प्राप्त न कर सको, क्यों क तुमने क्रौंच प क्षयों के जोड़े में से कामभावना से ग्रस्त एक का वध कर डाला है । (शब्दकोश के अनुसार क्रौंच सारस की अथवा बगुला की प्रजाति का पक्षी बताया जाता है। कसी अन्य शब्दकोश में चकवा या चकोर भी देखने को मला है)

सुभा षतानि में जल को रत्न की संज्ञा दी गयी है: 'पृ थव्याः त्री ण रत्नानि जलमग्न सुभा षतम्।' जल ही जीवन है, कन्तु यह आज दू षत होता जा रहा है। वैसे तो सरकार तरह- तरह का कानून बनाकर जल प्रदूषण को रोक रही है, कन्तु हमें स्वयं जल के महत्व को समझना चाहिये। गंद गयों को उसमें नहीं गरना चाहिये। गंदे पानी को शुद्ध करके ही नदियों में गरायें। कूड़े कचरे को गड्ढा बनाकर उसमें डाल दें फर उसके ऊपर म ी डालकर उसे ढक दें। नदियों में कपड़े न धुले और न ही मवे शयों को नहलायें मरे हुये जीवों को नदियों में न फेंके। इस तरह हम अपने जल को स्वच्छ रख पायेंगे।उद्योगों के लए ऊर्जा भी एक महत्वपूर्ण

आवश्यकता है जिसे कोयला, परमाणु ऊर्जा, जल आदि के माध्यम से प्राप्त कया जाता है जिसमें कोयला व परमाणु ऊर्जा अव शष्ट के रूप में बहुत ही घातक पदार्थ का वसर्जन जैसी बीमारियों का कारण ही परमाणु के साथ लापरवाही में जापान के नागासाकी व हिरो शमा जैसी स्थिति होगी। अतः जहाँ मनुष्य एक तरफ प्रकृति से उ चत लाभ अर्जित करता है, वहीं दूसरी तरफ वह ऐसे तत्वों के वसर्जन का कारक बनता जाता है, जो उसके अस्तित्व के लए खतरा बनता जा रहा है। इस बात से यद्य प मनुष्य अवगत है फर भी वह इस पर वचार करने के बजाय ऐसी गलतियाँ करता जा रहा है। आज पर्यावरण में संभवतः इतना प्रदूषण नहीं होता, यदि हमने वैदिक ऋ षयों के इस निर्देश का पालन कया होता 'शतहस्त समाहर, सहस्वहस्त स कर" अर्थात् 100 हाथों से लो ले कन हजार हाथों से दान भी करो हमने प्रकृति से लया तो बहुत ले कन उसे दिया कुछ भी नहीं। आज हमें पुनः ऋ षयों की वाणी पर मनन और चन्तन करने की आवश्यकता है।

पृथ्वी पर व्याप्त वे सम्पूर्ण वस्तुएँ जिस पर मनुष्य ने अपने मस्तिष्क का प्रयोग नहीं कया है, प्राकृतिक कहलाता है। प्रकृति के प्रत्येक तत्त्व एक दूसरे की आवश्यकता के पूरक है। मनुष्य भी प्रकृति का एक अंग है। अतः इसे भी अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लए प्रकृति पर निर्भर रहना पड़ता है। अतः प्रकृति का दोहन करना पड़ता है। अतः प्रकृति का दोहन करना इसके लए आवश्यक है। अतः यह इससे मुक्त नहीं हो सकता है। परन्तु यदि वह अन्य प्राकृतिक तत्वों की भाँति आवश्यकतानुरूप ही इसका दोहन करें तो यह मानव प्रकृति संबंध भी संतु लत रहेगा।

वैदिक साहित्य में पर्यावरण प्रदूषण जन्य उक्त समस्याओं के समाधान हेतु पर्यावरण संतुलन, संरक्षण, शोधन, पर्यावरण प्रदूषण निवारण तथा पर्यावरणशोधक अनेक उपायों तथा तत्वों का उल्लेख प्राप्त होता है। वेदों में पर्वत, जल, वायु, वर्षा, अग्नि, सूर्य, पृथ्वी, नदियाँ, वृक्ष-वनस्पतियाँ औष धयाँ ओजोन परत यज्ञ या अग्निहोत्र आदि पर्यावरणशोधक तत्व बताये गये हैं। वेदोक्त पर्यावरणशोधक तत्वों एवं उपायों को अपना कर हम व वध प्रकार की प्राकृतिक आपदाओं एवं प्राकृतिक प्रणा लयों की वसंगतियों से उत्पन्न समस्याओं का निराकरण करने में सफलता प्राप्त कर सकते हैं तथा अपने पर्यावरण को शुद्ध, संर क्षत एवं संतु लत बनाए रखने में पूर्ण रूपेण सक्षम एवं समर्थ हो सकते हैं।अस्तु जीवन को सुखमय बनाने के लये पर्यावरणीय संचेतना की महती आवश्यकता है। पर्यावरण की रक्षा और शु द्ध के उपाय 'वेदों' में निहित है। आधुनिक युग इन बिखरे हुए उपायों का संचेतनाओं का अनुसरण कर वैदिक रीति से पर्यावरण को सुर क्षत एवं प्रदूषण रहित बनाये जाने की आवश्यकता है,अन्यथा मृदा संरक्षण वर्षा जल संरक्षण वर्ष आदि को घोषणा मात्र से हम अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

संग्रन्थावली

1. यजुर्वेद 16/49

2. अथर्ववेद 12/1/27

3. अथर्ववेद 12/1/10

4. अथर्ववेद 12/1/42

5. अथर्ववेद 10/7/32

6 अथर्ववेद 12/1/97

7. अथर्ववेद 1/4/4

8. अथर्ववेद 4/13/3-4

9 अथर्ववेद 3/31/2

10 वेद 10/97/2

11 ऋग्वेद 10/146/5

12 अ भज्ञानशाकुन्तलम् का लदास 4/9

13 सुभा षतानि

14 मत्स्यपुराण

15 महाभारत

16 पूर्व मेघदूतम्

17. रामायण

18 संस्कृत साहित्य में पर्यावरण प्रो. सुषमा कुलश्रेष्ठ